अण्डमान निकोबार द्वीप समाचार

रजि.न.34300/80 संख्या 18 श्री विजय पुरम, रविवार, 18 जनवरी 2026 web: dt.andamannicobar.gov.in 2.00 रूपए

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पृथ्वी विज्ञान के केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) ने अटल द्वीपीय समुद्र विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र का दौरा किया, द्वीपों में ब्लू इकोनॉमी को बढ़ावा देने के लिए पायलट परियोजनाओं का शुभारम्भ किया

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह को भारत की ब्लू इकोनॉमी के हब के रूप में विकसित किया जाएगाः डॉ. जितेंद्र सिंह

भारत की अर्थव्यवस्था, पर्यावरण और रोज़गार को सशक्त बनाने के लिए महासागर विज्ञान और जैव–प्रौद्योगिकी का एकीकरणः डॉ. जितेंद्र सिंह

श्री विजय पुरम, 17 जनवरी।

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह को भारत की ब्लू इकोनॉमी के हब के रूप में विकसित किया जाएगा तथा भारत की अर्थव्यवस्था, पर्यावरण और रोज़गार को सशक्त बनाने के लिए महासागर विज्ञान और जैव–प्रौद्योगिकी का एकीकरण किया जाएगा। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पृथ्वी विज्ञान के केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष के राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने यह बात आज अटल द्वीपीय समुद्र विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र (एकोस्टी), डॉलीगंज, श्री विजय पुरम के दौरे के दौरान कही। इस अवसर पर उन्होंने अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में ब्लू इकोनॉमी और आजीविका को सशक्त बनाने के उद्देश्य से प्रमुख समुद्री प्रौद्योगिकी पहलों का शुभारंभ किया तथा उनकी समीक्षा की।

वैज्ञानिकों, अधिकारियों और हितधारकों को संबोधित करते हुए मंत्री ने कहा कि जैसे–जैसे भारत तेजी से दुनिया की शीर्ष अर्थव्यवस्थाओं में शामिल होने की ओर बढ़ रहा है, देश के भविष्य का आर्थिक मूल्य संवर्धन बड़े पैमाने पर अब तक अप्रयुक्त समुद्री संसाधनों से प्राप्त होगा। उन्होंने रेखांकित किया कि ब्लू इकोनॉमी पर सरकार का मजबूत फोकस प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस दृष्टिकोण को दर्शाता है, जिसके अनुसार केवल मुख्यभूमि पर ध्यान केंद्रित कर तथा द्वीप क्षेत्रों और तटीय क्षेत्रों को पीछे छोड़कर भारत का समग्र विकास संभव नहीं है।

यह कार्यक्रम पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय महासागर प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईओटी) की इकाई अटल द्वीपीय समुद्र विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र, डॉलीगंज, श्री विजय पुरम में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह से माननीय सांसद श्री बिष्णु पद राय, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन, अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, एनआईओटी एवं अन्य अनुसंधान संस्थानों के वैज्ञानिक, तथा स्थानीय विभागों और स्वयं सहायता समूहों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

संसद में अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के निरंतर और ऊर्जावान प्रतिनिधित्व की सराहना करते हुए मंत्री ने कहा कि सतत पक्षधरता के कारण द्वीप विकास की दिशा में राष्ट्रीय स्तर पर ध्यान और संसाधनों का प्रवाह सुनिश्चित हुआ है। उन्होंने स्मरण कराया कि वर्ष 2014 से प्रधानमंत्री ने उत्तर–पूर्वी क्षेत्र और द्वीप क्षेत्रों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है, जिसका प्रभाव अब क्षेत्र में वैज्ञानिक, प्रशासनिक और मंत्रिस्तरीय सहभागिता के बढ़ते स्तर में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है।

डीप ओशन मिशन का उल्लेख करते हुए डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि यह गर्व का विषय है कि

प्रधानमंत्री ने लाल किले की प्राचीर से इस मिशन की घोषणा एक बार नहीं बल्कि दो बार की, जो ब्लू इकोनॉमी के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। उन्होंने कहा कि लंबे समय तक कम अन्वेषित रहे समुद्री संसाधन, पारंपरिक संसाधनों के क्षीण होने के साथ, भारत की विकास यात्रा को बनाए रखने में निर्णायक भूमिका निभाएंगे। ब्लू इकोनॉमी रोज़गार सृजन, निर्यात, पर्यावरणीय सततता और समग्र आर्थिक मजबूती में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

मंत्री ने कार्यक्रम के दौरान शुरू की गई और प्रदर्शित की गई प्रमुख पहलों पर प्रकाश डाला, जिनमें समुद्री मछलियों की पायलट स्तर की ओपन–सी केज कल्चर और बड़े पैमाने पर समुद्री शैवाल (सीवीड) की खेती शामिल हैं। उन्होंने इस बात पर संतोष व्यक्त किया कि प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पहले ही हो चुका है, जो विकसित भारत के निर्माण की दिशा में "समग्र सरकार, समग्र समाज" दृष्टिकोण को दर्शाता है। स्थानीय अनुकूलता के महत्व पर ज़ोर देते हुए उन्होंने कहा कि अण्डमान तथा निकोबार क्षेत्र की विशिष्ट समुद्री प्रजातियां और तटीय विशेषताएं ऐसे परियोजनाओं के लिए इसे सबसे उपयुक्त स्थान बनाती हैं।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने महासागर विज्ञान के साथ जैव प्रौद्योगिकी के एकीकरण पर भी विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि भारत उन चुनिंदा देशों में शामिल है जिनके पास जैव प्रौद्योगिकी के लिए समर्पित नीति–बायोई3 (अर्थव्यवस्था, पर्यावरण और रोज़गार के लिए जैव प्रौद्योगिकी)–है। उन्होंने बताया कि समुद्री जैव–संसाधन प्लास्टिक के जैव–अपघटनीय विकल्प, नई औषधीय यौगिकों और उच्च मूल्य वाले जैव–उत्पादों का स्रोत बन सकते हैं। ऐसी पहलें एक साथ रोज़गार सृजन, पर्यावरण संरक्षण और बायोइकोनॉमी को सशक्त करेंगी।

मंत्री ने गैर–पशु आधारित खाद्य उत्पादों, वैकल्पिक समुद्री पोषण, वेस्ट–टू–वेल्थ प्रौद्योगिकियों और निर्यातोन्मुख समुद्री उत्पादों जैसे उभरते क्षेत्रों का भी उल्लेख किया और कहा कि विशेषकर यूरोप में इनके लिए अंतरराष्ट्रीय बाज़ार तेजी से बढ़

शेष पृष्ठ 4 पर

श्रीमती पूर्वा गर्ग ने संभाला दक्षिण अण्डमान की उपायुक्त का पद

श्री विजय पुरम, 17 जनवरी

श्रीमती पूर्वा गर्ग, आईएएस, ने 17 जनवरी, 2026 को औपचारिक रूप से दक्षिण अण्डमान की उपायुक्त के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। इसके साथ ही उन्होंने ज़िला प्रशासन के प्रमुख के रूप में अपना कार्यकाल प्रारंभ किया।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार उन्होंने यह पदभार निवर्तमान उपायुक्त श्री अर्जुन

शर्मा (आईएएस) के कार्यमुक्त होने के पश्चात, प्रशासन के आदेश संख्या–107 दिनांक 16 जनवरी, 2026 के अनुसार संभाला।

भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. जितेंद्र सिंह, 17 एवं 18 जनवरी, 2026 को अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के दो दिवसीय दौरे पर हैं, ने आज लोक निवास, श्री विजय पुरम में एडमिरल डी. के. जोशी, पीवीएसएम, एवीएसएम, वाईएसएम, एनएम, वीएसएम (अ.प्रा.), माननीय उप राज्यपाल, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह एवं उपाध्यक्ष, द्वीप विकास एजेंसी से भेंट की।

बालिका विद्यालय में कला प्रदर्शनी आज से

श्री विजय पुरम, 17 जनवरी।

शिक्षा विभाग द्वारा यहां के राजकीय बालिका वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में 18 जनवरी से 20 जनवरी, 2026 तक शाम 3 बजे से शाम 7 बजे तक तीन दिवसीय कला प्रदर्शनी का आयोजन किया जाएगा। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार इस प्रदर्शनी का उद्देश्य कला के विविध रूपों और रचनात्मक कृतियों को प्रदर्शित करके कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए एक मंच प्रदान करना है। प्रदर्शनी में कला प्रेमियों और छात्रों को सादर आमंत्रित किया गया है कि वे इस प्रदर्शनी में भाग लें और प्रदर्शित प्रतिभाओं से अनुभव प्राप्त करें।

विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर : एनसीसी कैडेटों ने प्रमुख शैक्षणिक और ऐतिहासिक संस्थानों का दौरा किया

श्री विजय पुरम, 17 जनवरी।

चल रहे विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर (एसएनआईसी) के अंतर्गत, राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) के कैडेटों ने श्री विजय पुरम के कई प्रमुख संस्थानों और विरासत स्थलों का शैक्षिक और प्रेरणादायक दौरा किया। कैडेटों ने भारतीय प्राणी सर्वेक्षण (जेडएसआई), समुद्रिका समुद्री संग्रहालय और भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण (बीएसआई) का भ्रमण किया, जहाँ उन्हें अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की समृद्ध जैव विविधता और वन्यजीवों, विविध समुद्री जीवन, जनजातीय संस्कृति और पारिस्थितिक महत्व के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त हुई। शैक्षिक दौरे में मरीना पार्क और फ्लैग प्वाइंट का भ्रमण

शेष पृष्ठ 4 पर

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पृथ्वी विज्ञान के केंद्रीय राज्य मंत्री ———पृष्ठ 1 का शेष

रहा है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि स्वयं सहायता समूहों और महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाया जाना चाहिए, ताकि ये पहलें घरेलू आय में वृद्धि करें और "वोकल फॉर लोकल" तथा "लोकल फॉर ग्लोबल" के दृष्टिकोण को मजबूत करें।

अपने संबोधन के समापन में डॉ. जितेंद्र सिंह ने वैज्ञानिकों और स्थानीय हितधारकों के उत्साह और समर्पण की सराहना की और कहा कि सीएसआईआर तथा जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान केंद्रों की संभावित भागीदारी सहित संस्थागत सहयोग के माध्यम से अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह भारत की ब्लू इकोनॉमी पहलों का एक प्रमुख केंद्र बन सकता है। उन्होंने क्षेत्र के साथ सतत जुड़ाव के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई और विश्वास व्यक्त किया कि ये प्रयास द्वीपसमूह के लिए दीर्घकालिक वैज्ञानिक, पर्यावरणीय और सामाजिक–आर्थिक लाभ प्रदान करेंगे।

अपने संबोधन में इससे पूर्व अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के माननीय सांसद श्री बिष्णु पद राय ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में ये द्वीप तेज़ी से प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं। एकोस्टी की प्रयोगशाला के अपने दौरे का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि समुद्री शैवाल (सीवीड) से बायो–प्लास्टिक तैयार किया जाना एकोस्टी की एक बड़ी उपलब्धि है और इसके संबंध में व्यापक जन–जागरूकता की आवश्यकता है।

उन्होंने आगे कहा कि इन द्वीपों को पर्यटन के क्षेत्र में ब्लू फ्लैग प्रमाण–पत्र प्राप्त हुआ है, जो अण्डमान–निकोबार द्वीपसमूह की पर्यटन संभावनाओं के विकास में अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि द्वीपों के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक रिसॉर्ट एवं होटल विकसित किए गए हैं, ऐसे में अपशिष्ट जल (सीवेज) के उपचार हेतु सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट्स की स्थापना अत्यंत आवश्यक है, ताकि दूषित जल को सुरक्षित रूप से निस्तारित किया जा सके।

माननीय मंत्री को अवगत कराते हुए उन्होंने कहा कि सी–बास एवं ग्रूपर मछली की बाज़ार में अच्छी मांग है और इसके मद्देनज़र अण्डमान–निकोबार द्वीपसमूह में फिश प्रोसेसिंग यूनिट्स की स्थापना की दिशा में विचार किया जाना चाहिए, जिससे द्वीपों की अर्थव्यवस्था को अच्छा राजस्व प्राप्त होगा। उन्होंने एकोस्टी से यह भी आग्रह किया कि खुले समुद्र में मरीन फिनफिश एवं सीवीड की खेती तथा इसके व्यापक लाभों के संबंध में आम जनता के बीच अधिक जागरूकता उत्पन्न की जाए।

मुख्य अतिथि एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत करते हुए पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन ने मुख्यभूमि से पधारकर एकोस्टी द्वारा तैयार किए गए महत्वपूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रमों–जैसे फिनफिश फार्मिंग, सीवीड फार्मिंग एवं समुद्री जल गुणवत्ता विश्लेषण–का उद्घाटन करने के लिए माननीय मंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि जब देश विकसित भारत–2047 के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है, तब हम सभी का दायित्व है कि राष्ट्र की प्रगति में अपना योगदान दें।

अपने संबोधन में आयुक्त–सह–सचिव (विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी) डॉ. सचिन शिंदे ने कहा कि अण्डमान–निकोबार द्वीपसमूह को पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की योजनाओं एवं व्यापक सेवाओं से अत्यधिक लाभ प्राप्त हुआ है। माननीय मंत्री द्वारा आज उद्घाटित तीन कार्यक्रमों से अण्डमान–निकोबार प्रशासन की उपलब्धियों में और वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि ब्लू इकोनॉमी के अंतर्गत ब्लू–बायोटेक्नोलॉजी का विस्तार द्वीपों में प्रभावी ढंग से किया जा रहा है, जिसके लिए उन्होंने मंत्रालय के प्रति आभार व्यक्त किया।

उन्होंने आगे बताया कि द्वीपों की विशाल समुद्री संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए तथा तटीय समुदायों के लिए आजीविका के विकल्पों में विविधता लाने के उद्देश्य से प्रशासन ने वैज्ञानिक सत्यापन, संस्थागत सहयोग, नियामक समर्थन, क्षमता निर्माण एवं लाभार्थी सहभागिता को सम्मिलित करते हुए चरणबद्ध दृष्टिकोण अपनाया है। इसी क्रम में, वर्ष 2020 में अण्डमान–निकोबार प्रशासन ने सीएसआईआर–सीएसएमसीआरआई के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए, जिसके तहत प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (पीएमएमएसवाई) की केंद्रीय क्षेत्र योजना के अंतर्गत अण्डमान तट पर सीवीड खेती का पायलट प्रोजेक्ट शुरू किया गया।

मरि–कल्चर विकास को और सुदृढ़ करने के लिए वर्ष 2024 में एकोस्टी–एनआईओटी के साथ एक और समझौता ज्ञापन किया गया, जिसके तहत अक्टूबर, 2024 में चिड़ियाटापू में खुले समुद्र में सीवीड खेती की तकनीकी एवं व्यावसायिक व्यवहार्यता का आकलन करने हेतु 1,000 वर्ग मीटर क्षेत्र में 10 राफ्टों के माध्यम से ग्रैसिलेरिया एडुलिस की सफल पायलट प्रदर्शन परियोजना संचालित की गई। उन्होंने कहा कि इन समन्वित प्रयासों के माध्यम से अण्डमान–निकोबार प्रशासन सीवीड एवं केज कल्चर को सतत, पर्यावरणीय रूप से ज़िम्मेदार एवं आय–सृजन गतिविधियों के रूप में विस्तार देने का लक्ष्य रखता है, जिससे आजीविका संवर्धन, समुद्री संसाधन संरक्षण एवं द्वीपों की समग्र ब्लू इकोनॉमी को महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा। इस कार्यक्रम में मत्स्य निदेशक सुश्री जगताप कल्याणी राजेंद्र, डॉ. दिलीप कुमार झा, प्रभारी अधिकारी, एकोस्टी–एनआईओटी भी उपस्थित रहे।

धन्यवाद ज्ञापित करते हुए डॉ. जी. धारणी, ग्रुप डायरेक्टर, एमबीटी, एनआईओटी ने माननीय मंत्री की गरिमामय उपस्थिति एवं एनआईओटी द्वारा जनहित में किए जा रहे कार्यों हेतु निरंतर प्रोत्साहन के लिए उनका आभार व्यक्त किया।

(स्रोतः प.सू.का./स्टाफ संवाददाता)

विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर : एनसीसी कैडेटों ———————पृष्ठ 1 का शेष

भी शामिल था, जिससे कैडेटों को क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता और सामरिक महत्व को समझने का अवसर मिला। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार इस दौरे का एक महत्वपूर्ण आकर्षण ऐतिहासिक सेल्यूलर जेल का भ्रमण था। कैडेटों को सेल्यूलर जेल के महत्व और भारत के उन स्वतंत्रता सेनानियों के वीरतापूर्ण योगदान के बारे में बताया गया, जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अथाह कष्ट सहे। यह दौरा सेल्यूलर जेल में लाइट एंड साउंड शो के साथ समाप्त हुआ। सशक्त वर्णन ने स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास को जीवंत रूप से चित्रित किया। यह दौरा एनसीसी सेना इकाई के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल के.वाई. सिंह की उपस्थिति में आयोजित किया गया था।

69वीं राष्ट्रीय स्कूल ट्रैक साइक्लिंग चैंपियनशिप में द्वीप टीम का शानदार प्रदर्शन

श्री विजय पुरम, 17 जनवरी

आइलैंड ट्रैक साइक्लिंग टीम ने 13 से 17 जनवरी, 2026 तक सिदो कान्हू वेलोड्रोम, रांची में आयोजित 69वीं राष्ट्रीय स्कूल ट्रैक साइक्लिंग चैंपियनशिप में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। चैंपियनशिप के अंतिम दिन अंडर–17 बालक वर्ग की टीम–किंगडम ब्राइट, सॉ ज़ेकरियाह, लियोनाल्ड बेकर और मेसी कार्टसन–ने टीम स्प्रिंट स्पर्धा में रजत पदक जीता। इसी स्पर्धा में अंडर–17 बालिका वर्ग की टीम–रोसी वायलेट, आई.एस. ब्रिडनी, नमिता वायलेट और ऐन मिंज–ने भी रजत पदक हासिल किया। कुल मिलाकर द्वीप टीम ने एक स्वर्ण, तीन रजत और दो कांस्य सहित कुल छह पदक अर्जित किए। इसके अतिरिक्त टीम ने अंडर–17 बालिका वर्ग में ओवरऑल उप विजेता तथा अंडर–17 बालक वर्ग में ओवरऑल द्वितीय उप विजेता का स्थान प्राप्त किया। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार 69वीं एसजीएफआई ट्रैक साइक्लिंग चैंपियनशिप में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सुश्री नमिता वायलेट का चयन आगामी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं की तैयारी हेतु नई दिल्ली में इंडिया कैंप के लिए किया गया है। श्री विक्रम सिंह, निदेशक (शिक्षा) ने टीम, उनके कोच एवं प्रबंधक को इस सराहनीय उपलब्धि पर हार्दिक बधाई दी।

पशु कल्याण पखवाड़ा : पालतू पशु वॉक का आयोजन

श्री विजय पुरम, 17 जनवरी

पशुपालन एवं पशु चिकित्सा सेवा विभाग ने पशु कल्याण पखवाड़ा 2026 (14–30 जनवरी) के अंतर्गत आज एक रंगारंग एवं भव्य पेट वॉक का सफल आयोजन किया। यह वॉक सुबह 6 बजे मरीना पार्क गेट से प्रारंभ हुई, जिसे डॉ. के. ए. नवीन, निदेशक, पशुपालन एवं पशु चिकित्सा सेवा विभाग ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया, और इसका समापन फ्लैग प्वाइंट पर हुआ। इस आयोजन में बड़ी संख्या में डॉग लवर्स, पालतू पशु मालिक और उनके पालतू पशु उत्साहपूर्वक शामिल हुए। प्रतिभागियों ने पशु कल्याण से संबंधित संदेशों वाले पोस्टर एवं बैनर के साथ सहभागिता की। समापन अवसर पर निदेशक ने आधुनिक पालतू एवं आवारा पशु प्रबंधन के महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए महंगे नस्लों को खरीदने के बजाय आवारा कुत्तों और बिल्लियों को गोद लेने का आह्वान किया। उन्होंने एनिमल बर्थ कंट्रोल (एबीसी) कार्यक्रम के महत्व को रेखांकित किया, जो मानवीय तरीके से नसबंदी कर जनसंख्या नियंत्रण, क्षेत्रीय झगड़ों में कमी तथा डॉग–बाइट की घटनाओं को घटाने में सहायक है, साथ ही द्वीपों की रेबीज–मुक्त स्थिति बनाए रखने में योगदान देता है। उन्होंने नागरिकों से यह भी आग्रह किया कि आवारा पशुओं को केवल निर्धारित सामुदायिक फीडिंग स्टेशनों पर ही भोजन कराएं। इस अवसर पर कई पशु प्रेमियों ने विभाग द्वारा वर्ष भर चलाए जा रहे मुफ्त टीकाकरण, नसबंदी अभियान, स्वास्थ्य शिविरों और जागरूकता कार्यक्रमों के लिए सराहना व्यक्त की। आयोजन के अंत में विभाग ने सभी प्रतिभागियों–दो पैरों वाले और चार पैरों वाले–का धन्यवाद किया और प्रोत्साहन स्वरूप सभी को पेट केयर किट वितरित की गई। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार यह पेट वॉक पशु कल्याण पखवाड़ा 2026 का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही। पखवाड़े के दौरान आगे भी पशु चिकित्सा स्वास्थ्य शिविर, स्कूली बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिताएं, पशु प्राथमिक उपचार पर जागरूकता सत्र तथा विभागीय फार्मों एवं संस्थानों के शैक्षिक भ्रमण आयोजित किए जाएंगे। विभाग ने सभी निवासियों, पालतू पशु मालिकों, पशु प्रेमियों, विद्यालयों एवं स्वैच्छिक संगठनों से शेष कार्यक्रमों में भाग लेकर अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में एक करुणामय, मानवीय एवं सामंजस्यपूर्ण समाज के निर्माण में योगदान देने का आह्वान किया है।

पशु कल्याण पखवाड़ा : एलएफसी डॉलीगंज में श्रद्धा व उत्साह के साथ मनाया गया माट्टू पोंगल

श्री विजय पुरम, 17 जनवरी

पशुपालन एवं पशु चिकित्सा सेवा विभाग द्वारा पशु कल्याण पखवाड़ा 2026 (14–30 जनवरी) के अंतर्गत कल पशुधन फार्म परिसर (एलएफसी), डॉलीगंज में माट्टू पोंगल पर्व को अत्यंत श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया गया। यह आयोजन पखवाड़े के प्रमुख कार्यक्रमों में से एक रहा।

इस अवसर पर कृषि, दुग्ध उत्पादन, ग्रामीण आजीविका तथा द्वीपों की सांस्कृतिक विरासत में पशुओं की पवित्र भूमिका को सम्मानित किया गया। फार्म में मौजूद पशुओं को विधिवत स्नान कराया गया, उनके सींगों को रंगों से सजाया गया तथा ताजे फूलों, मालाओं और पारंपरिक आभूषणों से अलंकृत किया गया। पशुओं के लिए विशेष रूप से पारंपरिक पोंगल तैयार कर उन्हें अर्पित किया गया, जो खेती, खाद्य सुरक्षा एवं अर्थव्यवस्था में उनके अथक योगदान के प्रति कृतज्ञता और सम्मान का प्रतीक था।

इस कार्यक्रम में डॉ. के. ए. नवीन, निदेशक, पशुपालन एवं पशु चिकित्सा सेवा विभाग की गरिमामय उपस्थिति रही, साथ ही विभाग के कई वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी भी उपस्थित थे। अपने संबोधन में निदेशक ने कहा कि माट्टू पोंगल केवल एक पर्व नहीं है, बल्कि यह हमें पशुओं को उचित पोषण, स्वास्थ्य देखभाल, गरिमामय जीवन परिस्थितियाँ एवं क्रूरता से मुक्त वातावरण प्रदान करने की नैतिक एवं मानवीय ज़िम्मेदारी की याद दिलाता है।

समावेशी समाज की ओर एक सशक्त पहल

दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण हेतु पर्पल फेयर के तहत पूर्व–कार्यक्रम आयोजित

श्री विजय पुरम, 17 जनवरी

पर्पल फेयर एक समावेशी प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य दिव्यांगजनों को सशक्त बनाना है। यह मंच खेल, संस्कृति, कौशल एवं सामाजिक सहभागिता जैसे विभिन्न क्षेत्रों में उनकी क्षमताओं, प्रतिभाओं और संभावनाओं को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करता है। "पर्पल" शब्द गरिमा, समावेशन और सशक्तिकरण का प्रतीक है, जो दिव्यांगजनों के लिए एक समावेशी समाज के निर्माण की राष्ट्रीय परिकल्पना के अनुरूप है। पर्पल फेयर 2026 के तहत आयोजित दो दिवसीय पूर्व–कार्यक्रम के अंतर्गत दिव्यांगजनों के लिए खेल प्रतियोगिताओं का नेताजी स्टेडियम, श्री विजय पुरम में सफलतापूर्वक शुभारंभ किया गया। यह आयोजन अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में दिव्यांगजनों के लिए खेलों के माध्यम से समावेशन, सशक्तिकरण एवं समान अवसरों को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि सिद्ध हुआ।

इस कार्यक्रम का आयोजन समग्र क्षेत्रीय केन्द्र (सीआरसी), अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह, एनआईईपीएमडी, चेन्नई (दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा किया गया, जिसमें समाज कल्याण निदेशालय एवं शिक्षा निदेशालय, अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन का सहयोग रहा। अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के माननीय सांसद श्री बिष्णु पद राय ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि समावेशी खेल दिव्यांगजनों में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता एवं सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देते हैं। श्री विक्रम सिंह, निदेशक, शिक्षा निदेशालय ने विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में भाग लिया और दिव्यांगजनों के कल्याण के प्रति प्रशासन की प्रतिबद्धता दोहराते हुए खेलों की समग्र विकास में भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमती सुमित्तामोल एस., निदेशक, सीआरसी अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के स्वागत भाषण से हुआ, जिसमें उन्होंने पर्पल फेयर 2026 के उद्देश्यों एवं दृष्टि को साझा किया।

आयोजित प्रतियोगिताओं में ट्रैक एवं फील्ड स्पर्धाएं जैसे दौड़, गोला फेंक एवं चक्का फेंक शामिल रहीं। इसके अलावा श्रवण बाधित दिव्यांगजनों के लिए एडेप्टिव क्रिकेट, तथा दृष्टिबाधित दिव्यांगजनों के लिए टीम एवं इनडोर खेलों में एडेप्टिव लूडो, टेबल बॉलिंग, बॉल एंड ट्रैक एवं रस्साकशी का आयोजन किया गया। ये सभी प्रतियोगिताएं विभिन्न आयु वर्गों एवं दिव्यांगता श्रेणियों के अनुरूप डिज़ाइन की गई थीं। जेएनआरएम कॉलेज के स्वयंसेवकों ने प्रतिभागियों की सहायता एवं कार्यक्रम समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आयोजकों ने समावेशन के प्रति जागरूकता बढ़ाने एवं दिव्यांगजनों की क्षमताओं को उजागर करने में सहयोग के लिए मीडिया के प्रति आभार व्यक्त किया। 'पंख' एनजीओ की अध्यक्षा श्रीमती कोमल आनंद एवं उनकी टीम द्वारा दिव्यांग समाज को प्रदान किया जा रहा निरंतर सहयोग, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में दिव्यांग समुदाय के सशक्तिकरण के लिए समर्पण को और सुदृढ़ करता है।

इस कार्यक्रम में सीआरसी के लाभार्थियों एवं शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत दक्षिण क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। शिक्षकों, विशेष शिक्षकों एवं अभिभावकों का भी भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। कुल मिलाकर अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के विभिन्न विद्यालयों, संस्थानों एवं क्षेत्रों से 395 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी की। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार पर्पल फेयर 2026 का भव्य समापन 30 जनवरी, 2026 को प्रस्तावित है, जो इस बहु–चरणीय अभियान का समापन करेगा।

श्रवण बाधित बच्चों के समावेशन पर अभिमुखीकरण कार्यक्रम हुआ

श्री विजय पुरम, 17 जनवरी

राजकीय माध्यमिक विद्यालय, पुदुमदुरई, दक्षिण अण्डमान में श्रवण बाधित बच्चों के समावेशन पर अभिमुखीकरण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य समावेशी शैक्षिक परिवेश में श्रवण बाधित बच्चों को सहयोग प्रदान करने हेतु शिक्षकों एवं अभिभावकों में जागरूकता बढ़ाना तथा उनकी क्षमता का विकास करना था। कार्यक्रम में कुल सात सत्र आयोजित किए गए, जिनका संचालन अनुभवी संसाधन व्यक्तियों द्वारा किया गया। इसमें कुल 14 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें 4 शिक्षक, 1 प्रधानाध्यापक, 8 अभिभावक/परिवारजन तथा 1 आंगनवाड़ी कार्यकर्ता शामिल थे। सत्रों में श्रवण बाधा की समझ, समावेशी कक्षा रणनीतियाँ, अभिभावकों की भूमिका एवं श्रवण बाधित बच्चों के लिए सहयोग तंत्र जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार अभिमुखीकरण सत्रों के अतिरिक्त, प्रतिभागियों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने एवं उनकी समझ को और सुदृढ़ करने के लिए श्रवण बाधा से संबंधित गतिविधियाँ भी आयोजित की गईं।

सूचना, प्रचार और पर्यटन निदेशालय द्वारा प्रकाशित तथा प्रबन्धक, राजकीय मुद्रणालय द्वारा मुद्रित, वितरण तथा विज्ञापन के लिए फोन–229465, प्रधान सम्पादक (प्रभारी) पी. कैरल डी. सोणी
e-mail:dweepsamachar@gmail.com

भारतीय अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला ने दिल्ली में रियलिटी थिएटर और अंतरिक्ष प्रदर्शनी का किया उद्घाटन

नई दिल्ली, 17 जनवरी।

भारतीय अंतरिक्ष यात्री एवं एक्ज़िओम–4 मिशन के मिशन पायलट ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने प्रगति मैदान स्थित राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र (एनएससी) में शनिवार को वर्चुअल रियलिटी थिएटर और अंतरिक्ष प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। यह प्रदर्शनी 30 जनवरी तक चलेगी।

एनएससी के बयान के मुताबिक इस अवसर पर आयोजित होने वाली अंतरिक्ष प्रदर्शनी का शीर्षक पृथ्वी से कक्षा तक: अंतरिक्ष की खोज साथ मिलकर है, जो खगोल विज्ञान और अंतरिक्ष अन्वेषण में भारत की समृद्ध विरासत और भविष्य की दृष्टि को प्रस्तुत करती है। इस कार्यक्रम के तहत करीब 400 स्कूली छात्रों के लिए अंतरिक्ष यात्री से मिलें शीर्षक से एक विशेष संवाद सत्र आयोजित किया गया।

विशिष्ट अतिथि के रूप में शुभांशु शुक्ला ने दिल्ली–एनसीआर के 22 स्कूलों के विद्यार्थियों को संबोधित किया। उन्होंने अंतरिक्ष मिशन के लिए प्रशिक्षण, माइक्रोग्रैविटी के शारीरिक प्रभावों और अंतरिक्ष यात्रा की चुनौतियों पर चर्चा की। इस दौरान उन्होंने अंतरिक्ष से जुड़ी विजुअल क्लिप्स भी साझा कीं। संवाद सत्र में छात्रों ने अंतरिक्ष में जीवन शैली पर सवाल किए, जबकि अभिभावकों ने करियर मार्गदर्शन प्राप्त किया। उन्होंने बताया कि चयन प्रक्रिया के माध्यम से उनका प्रवेश इस क्षेत्र में हुआ, जबकि पहले यह उनका प्राथमिक करियर लक्ष्य नहीं था। इस संवाद का उद्देश्य अंतरिक्ष अन्वेषण, मानव अंतरिक्ष उड़ान और वैश्विक वैज्ञानिक सहयोग में भारत की बढ़ती भूमिका को उजागर करके युवा छात्रों को प्रेरित करना है।

इस सत्र के दौरान छात्रों को अंतरिक्ष में जीवन और चुनौतियों के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी मिली। उन्हें भविष्य के अंतरिक्ष मिशनों और करियर के अवसरों पर एक संवादात्मक प्रश्नोत्तर सत्र में भाग लेने का मौका मिला। छात्रों को विशेषज्ञों के साथ सीधे बातचीत करने का भी अवसर मिला, जिससे अनुभवात्मक शिक्षा के जरिए वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा मिला।

मानव अंतरिक्ष उड़ान केंद्र में समूह निदेशक अनुराग कुमार सिन्हा ने कहा कि यह पहल न केवल मनोरंजन प्रदान करती है, बल्कि भारत के भविष्य के वैज्ञानिकों और अंतरिक्ष यात्रियों को प्रेरित करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। आगंतुकों के लिए 30 जनवरी तक चलने वाली प्रदर्शनी का टिकट वयस्क के लिए 80 रुपये और बच्चों के लिए 30 रुपये तक है।

वर्चुअल नेट मीटरिंग सिस्टम स्थापित करने वाला रायपुर देश का पहला शहर

रायपुर, 17 जनवरी।

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर ने देशभर में प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत एक नई मिसाल कायम की है। इस योजना के तहत रायपुर की पार्थिवी पैसिफिक सोसायटी में वर्चुअल नेट मीटरिंग का सफल संचालन होने से सोसायटी के फ्लैट में रहने वाले 20 परिवारों को बिजली बिल में बड़ी राहत मिलने लगी है। वर्चुअल नेट मीटरिंग सिस्टम स्थापित करने वाला रायपुर देश का पहला शहर बन गया है।

इस नई व्यवस्था का सबसे बड़ा फायदा उन लोगों को हो रहा है, जो अपार्टमेंट या बहुमंजिला इमारतों में रहते हैं और जिनके पास छत पर सोलर पैनल लगाने के लिए पर्याप्त जगह नहीं होती। पार्थिवी पैसिफिक सोसायटी में वर्चुअल नेट मीटरिंग की सफलता को देखते हुए छत्तीसगढ़ विद्युत वितरण कंपनी अब इस मॉडल को प्रदेश के अन्य शहरों और क्षेत्रों में भी स्थापित करने की पहल शुरू कर दी है।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का कहना है कि यह परियोजना छत्तीसगढ़ में नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता और अन्य राज्यों के लिए एक उदाहरण है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्वच्छ और हरित भारत के विजन से जुड़कर अब अधिक से अधिक लोग सौर ऊर्जा का लाभ उठा सकेंगे।

पार्थिवी पैसिफिक रिहायशी सोसायटी में एक ही सोलर प्लांट से 20 फ्लैटों में रहने वाले परिवार बिजली का उपयोग कर रहे हैं, जिससे बिजली खर्च में भी बड़ी बचत हो रही है। यह सोलर प्रोजेक्ट कैपेक्स मॉडल पर लगाया गया है। यानी 20 परिवारों ने अपनी–अपनी राशि लगाकर सोलर प्लांट स्थापित किया और यह प्लांट पूरी तरह उन्हीं की संपत्ति है। पूरे प्रोजेक्ट की लागत करीब 24 लाख रुपये आई। प्रत्येक परिवार ने लगभग 1.20 लाख रुपये का निवेश किया है, जिसमें केंद्र सरकार की ओर से 78 हजार रुपये की सब्सिडी मिली। छत्तीसगढ़ सरकार ने इस योजना को और आकर्षक बनाते हुए अपनी ओर से 30 हजार रुपये की अतिरिक्त सब्सिडी दे रही है। इससे लोगों पर आर्थिक बोझ और कम होगा।

पार्थिवी पैसिफिक सोसायटी सोलर सिस्टम लगने के बाद इसका सीधा लाभ बिजली बिल में दिखने लगा। इस सिस्टम से सभी फ्लैट के बिजली बिल में सालाना 6 लाख 30 हजार रुपये की बचत होने की उम्मीद है। इसका मतलब यह है कि प्रत्येक परिवार को अपने बिजली बिल पर लगभग 31 हजार 500 रुपये की बचत होगी। प्रत्येक परिवार को लगभग 300 यूनिट तक बिजली का क्रेडिट मिलने लगा है, जिससे मासिक बिजली खर्च में अच्छी–खासी कमी आई है।

वर्चुअल नेट मीटरिंग के तहत मान लीजिए किसी अपार्टमेंट में 200 किलोवाट का सोलर प्लांट लगाया गया है। हर फ्लैट के मीटर के साथ एक कंबाइंड मीटर जिसे एक्सपोर्ट मीटर भी कहते हैं, उसके जरिए बिजली ग्रिड में जाती है। बाद में, जितनी हिस्सेदारी जिस फ्लैट की होती है, उसी हिसाब से बिजली का लाभ सभी को उनके बिल में मिल जाता है।

भारत मंडपम में आयोजित संगोष्ठी में पेश की गई कॉफी टेबल बुक 'वीर विठ्ठलभाई पटेल की गौरव गाथा'

नई दिल्ली, 17 जनवरी।

भारत मंडपम में चल रहे विश्व पुस्तक मेला में आज दिल्ली विधानसभा सचिवालय द्वारा प्रकाशित कॉफी टेबल बुक वीर विठ्ठलभाई पटेल की गौरव गाथा: एक शताब्दी यात्रा पर एक संगोष्ठी आयोजित किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह ने कहा कि इतिहास को भूलना लोकतंत्र को कमजोर करता है और वीर विठ्ठलभाई पटेल को स्मरण करना एक लोकतांत्रिक अनिवार्यता है। उन्होंने कहा कि वीर विठ्ठलभाई पटेल ने औपनिवेशिक दौर में सिद्धांत आधारित विधायी कार्यवाही के जरिए संसदीय लोकतंत्र की मजबूत नींव रखी और स्वतंत्रता संग्राम में अहम भूमिका निभाई।

इस अवसर पर दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि वीर विठ्ठलभाई पटेल ने सरदार वल्लभभाई पटेल और नेताजी सुभाष चंद्र बोस जैसे स्वतंत्रता सेनानियों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि वीर विठ्ठलभाई पटेल ने भारतीय संसदीय लोकतंत्र को संस्थागत स्वरूप दिया और राष्ट्रीय नेतृत्व को दिशा प्रदान की। पुस्तक के बारे में बात करते हुए श्री गुप्ता ने कहा कि यह प्रकाशन केवल अकादमिक जगत तक सीमित न रहकर आम लोगों तक इतिहास को पहुंचाने का प्रयास है।

दुनिया में हैं 195 देश, लेकिन भारत और चीन में ही क्यों रहती है 40 फीसदी से ज्यादा आबादी? सोचा है कभी

नई दिल्ली, 17 जनवरी।

बढ़ती हुई जनसंख्या इस वक्त भारत के लिए समस्या बनी हुई है. आज की तारीख में भारत दुनिया में सबसे ज्यादा आबादी वाला देश है. कहा तो यह भी जा रहा है कि भारत में इतनी ज्यादा जनसंख्या की वजह से यहां पर गरीबी और बेरोजगारी बढ़ती जा रही है. चीन ने भले ही अपनी बढ़ती हुई आबादी को कंट्रोल में कर लिया है, लेकिन एक वक्त पर वहां पर भी ऐसा ही हाल था. हालांकि आज भी चीन दुनिया का दूसरा सबसे ज्यादा आबादी वाला देश है. दुनिया की आबादी 8 बिलियन के आसपास बताई जाती है, लेकिन 40% से ज्यादा आबादी सिर्फ भारत और चीन में ही रहती है. चलिए जानें कि ऐसा क्यों है.

आज के समय में भारत और चीन से भी ज्यादा विकसित देश दुनिया में मौजूद हैं, ऐसे में सोचने वाली बात यह है कि सिर्फ इन दोनों देशों में इतनी आबादी रहती है तो यहां पर ऐसा क्या खास है. यूरोपियन और अमेरिकन देशों की आबादी इतनी ज्यादा क्यों नहीं बढ़ी जितनी कि इन दोनों देशों में है. वैसे तो यह धरती 4 अरब तक लोगों के रहने के लिए परफेक्ट है, लेकिन आज की तारीख में यहां दोगुनी संख्या में आबादी रह रही है. दुनिया की 60% आबादी सिर्फ एशिया में रहती है.

एक्सपर्ट्स का मानना है कि भारत की मिट्टी बहुत ज्यादा उपजाऊ है और यहां पर बहुत अच्छे तरीके से खेती हो सकती है. आबादी बढ़ने का एक कारण यह भी हो सकता है. हालांकि यह अभी से नहीं है, बल्कि हजारों साल पहले सभ्यताओं के समय भी भारत और चीन बड़ी आबादी का केंद्र रहे हैं. लेकिन इन दोनों देशों की आबादी बढ़ने के कई कारण हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं.

ये दोनों देश भौगोलिक लिहाज से रहने के लिए परफेक्ट

माने जाते हैं. भारत में हिमालयन रेंज है और चीन की रेंज में चांगबाई माउंटेन रेंज है. इन्हीं दोनों वजहों के कारण साइबेरिया की बर्फीली हवाएं यहां नहीं आ पाती हैं. इसके अलावा ये माउंटेन रेंज दक्षिणी हवाओं को बाहर जाने से रोकते हैं, इसलिए यहां पर बारिश अच्छी होती है.

भारत और चीन में पानी की कमी नहीं हैं. भारत में जहां करीब 400 नदियां बहती हैं, वहीं चीन में यह आंकड़ा 1500 से ज्यादा है. इसी की वजह से पहाड़ों में एक अच्छा रहने लायक पर्यावरण बनता है. जिंदा रहने के लिए आमतौर पर तीन चीजें अहम हैं रोटी कपड़ा और मकान. ये तीनों चीजें दोनों देशों में आसानी से उपलब्ध हो जाता है. दोनों देशों में कृषि भूमि अच्छी होने की वजह से यहां पर लोगों ने रहने के लिए घर बनाने शुरू कर दिए थे. इसके अलावा दोनों ही देशों में खनिज और वन ज्यादा मात्रा में हैं, जो कि जनसंख्या को आकर्षित करते हैं. कुल मिलाकर भारत और चीन में इतनी आबादी होने के कारण कृषि योग्य भूमि, सांस्कृतिक कारण, आर्थिक विकास, प्राकृतिक संसाधन और जनसंख्या वृद्धि शामिल है.

दक्षिण एशिया उभरते क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ विकास स्थल, व्यापारिक चुनौतियों के बीच भारत बाजार को मजबूती

नई दिल्ली, 17 जनवरी।

दक्षिण एशिया उभरते क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ विकास स्थल बना हुआ है। व्यापारिक चुनौतियों में वृद्धि के बावजूद भारत बाजार के दृष्टिकोण को मजबूती प्रदान कर रहा है। यह विश्व आर्थिक मंच के नवीनतम सर्वेक्षण का एक मुख्य निष्कर्ष है। अगले सप्ताह होने वाली दावोस वार्षिक बैठक के पहले इस निष्कर्ष को जारी किया गया है। मुख्य अर्थशास्त्री आउटलुक का मानना है कि रोजगार पर गतिरोध को कम करके भारत सुधार के मार्ग पर अग्रसर है। इसका कहना है कि अमरीकी प्रौद्योगिकी कंपनियों से निवेश के साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की स्वीकृति बढ़ रही है।

रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक आर्थिक आउटलुक में थोड़ा सुधार हुआ है, लेकिन परिसंपत्ति मूल्यांकन, बढ़ते ऋण, भू–आर्थिक समायोजन और तीव्र आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तैनाती से अवसर और जोखिम दोनों के बढ़ने से अनिश्चितताएं बनी हुई हैं। सर्वेक्षण में शामिल लगभग 53 प्रतिशत प्रमुख अर्थशास्त्रियों को उम्मीद है कि आने वाले वर्ष में वैश्विक आर्थिक परिस्थितियां कमजोर होंगी। वहीं पिछले साल सितंबर महीने में यह राय रखने वाले 72 प्रतिशत लोग इस श्रेणी में थे। प्रौद्योगिकी को लेकर अधिक अनिश्चितता बनी हुई है। 52 प्रतिशत लोग अमरीका में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से संबंधित शेयरों में गिरावट आने और 40 प्रतिशत लोग इसमें वृद्धि होने की आशा कर रहे हैं।

वृद्धि को लेकर अपेक्षाएं क्षेत्र के अनुसार अलग–अलग हैं। अर्थशास्त्री यूरोप में कमजोर से मामूली वृद्धि तथा दक्षिण एशिया और पूर्वी एशिया में विकास में तीव्र गति की आशा कर रहे हैं। दो तिहाई प्रमुख अर्थशास्त्रियों के सर्वेक्षण के अनुसार दक्षिण एशिया क्षेत्रीय विकास परि.श्य के शीर्ष पर लौट चुका है।

जेडएसआई के वैज्ञानिकों ने खोजी अंधे केसिलियन की नई प्रजाति

कोलकाता, 16 जनवरी।

भारतीय वैज्ञानिकों की एक टीम ने महाराष्ट्र के उत्तरी पश्चिमी घाट में एक अत्यंत दुर्लभ, भूमिगत जीवन जीने वाले उभयचर की नई प्रजाति की खोज की है। इस नई प्रजाति का नाम गेगेनियोफिस वाल्मीकि रखा गया है। यह खोज इसलिए भी खास मानी जा रही है क्योंकि एक दशक से अधिक समय बाद इस जीनस में किसी नई प्रजाति की वैज्ञानिक पहचान हुई है। इस समूह के जीवों को वैज्ञानिक जगत में अक्सर "हिडन एम्फीबियंस" यानी छिपे हुए उभयचर कहा जाता है।

यह प्रजाति वर्ष 2017 में पहली बार महाराष्ट्र के सतारा जिले के वाल्मीकि पठार क्षेत्र से एकत्र की गई थी। कोलकाता स्थित भारतीय प्राणी सर्वेक्षण (जेडएसआई) के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. केपी दिनेश ने इसे खोजा था। खोज स्थल के पास स्थित ऐतिहासिक महर्षि वाल्मीकि मंदिर के सम्मान में इसका नामकरण किया गया। इस महत्वपूर्ण शोध को अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक पत्रिका फिलोमेडूसा में प्रकाशित किया गया है। अध्ययन भारतीय प्राणी सर्वेक्षण, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, बालासाहेब देसाई कॉलेज और म्हादेई रिसर्च सेंटर के वैज्ञानिकों के संयुक्त प्रयास से पूरा हुआ।

केसिलियन बिना पैरों वाले, केंचुए जैसे उभयचर होते हैं, जो मिट्टी और जैविक परतों के भीतर जीवन बिताते हैं। ये न तो मेंढकों की तरह आवाज निकालते हैं और न ही आसानी से दिखाई देते हैं, इसलिए इनकी खोज बेहद मुश्किल होती है। वैज्ञानिकों के अनुसार, गेगेनियोफिस समूह की पहचान मैदानी स्तर पर करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि इन्हें आमतौर पर 'ब्लाइंड केसिलियन' कहा

जाता है। इनकी आंखें हड्डीदार खोपड़ी के नीचे छिपी होती हैं और ये दिखने व चलने में बिल्कुल केंचुए जैसे प्रतीत होते हैं। इसी कारण यह साबित करने में कि यह एक नई प्रजाति है, वैज्ञानिकों को वर्षों तक गहन शारीरिक और आनुवंशिक विश्लेषण करना पड़ा।

पश्चिमी घाट को विश्व का एक प्रमुख जैव विविधता हॉटस्पॉट माना जाता है, लेकिन इसके बावजूद केसिलियन उभयचर अब भी सबसे कम समझे जाने वाले जीवों में शामिल हैं। वैश्विक स्तर पर ज्ञात लगभग 9000 उभयचर प्रजातियों में से केवल 231 केसिलियन हैं। भारत में 457 उभयचर प्रजातियों में से 42 केसिलियन दर्ज की गई हैं, जबकि पश्चिमी घाट में 26 स्थानिक प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें से 11 गेगेनियोफिस समूह से संबंधित हैं। दिलचस्प रूप से, जहां दक्षिणी पश्चिमी घाट में उभयचरों की कुल विविधता अधिक पाई जाती है, वहीं उत्तरी पश्चिमी घाट में गेगेनियोफिस प्रजातियों का विशेष संकेंद्रण देखने को मिलता है।

इतिहास के पन्नों में 18 जनवरी

नई दिल्ली, 17 जनवरी।

2020 – झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा भारतीय तीरंदाजी संघ (एएआई) के नए अध्यक्ष चुने गये।
2009 – सौरभ गांगुली को 'बंगाल क्रिकेट एसोसिएशन' ने सोने के बैट से सम्मानित किया।
2008 – उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री मायावती की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक में निजी विश्वविद्यालय खोलने के लिए दिशा–निर्देशों की मंजूरी प्रदान की गयी।
2007 – विश्व की सबसे वृद्ध महिला जूली विनफ़्रेड बर्टरंड का कनाडा में निधन।
2006 – संयुक्त राज्य अमेरिका में इच्छा मृत्यु पर सुप्रीम कोर्ट ने मुहर लगायी।
2005 – सुप्रीम कोर्ट ने सांसदों को पेट्रोल पम्प आवंटित नहीं करने की सिफ़ारिश की।
2002 – संयुक्त राज्य अमेरिका भारत को अत्याधुनिक हथियार देने को राजी, कॉलिन पावेल ने कहा कि पाक आतंकवादियों की सूची पर कार्रवाई करे तभी भारत वार्ता करेगा।
2001 – लारेंट काविला की हत्या के बाद उसके पुत्र ने कांगों की सत्ता सम्भाली।
1997 – 'नफीसा जोसेफ़' 'मिस इंडिया' बनीं।
1989 – चेकोस्लोवाकिया में लाखों लोगों ने आज़ादी सच्चाई और मानवाधिकार के समर्थन में प्रदर्शन किया।
1987 – लंदन में प्रचार माध्यमों के 40 देशों के प्रतिनिधियों की हुई बैठक में सेंसरशिप के ख़लिाफ़ एकजुट होकर संघर्ष की घोषणा की गई।
1986 – दक्षिण यमन की राजधानी अदन में जबरदस्त संघर्ष शुरू होने पर विदेशी नागरिक भागने लगे।
1976 – फ्रांस ने जासूसी के आरोप में 40 सोवियत अधिकारियों को देश से निष्कासित किया।
1974 – इजरायल तथा मिस्र ने हथियारों का समझौता किया।
1973 – अमेरिका और उत्तर वियतनाम में शांति समझौते का पाठ तैयार करने के लिए वार्ताकारों की बैठक शीघ्र होने की घोषणा की।
1968 – अमेरिका और सोवियत संघ परमाणु हथियारों पर नियंत्रण के लिए एक संधि के प्रारूप पर सहमत हुए।
1963 – फ्रांस ने यूरोपीय साझा बाज़ार से ब्रिटेन को अलग करने की वकालत की।
1962 – अमेरिका ने नेवादा में परमाणु परीक्षण किया।
1960 – अमेरिका तथा जापान ने संयुक्त रक्षा समझौता किया।
1959 – महात्मा गांधी की सहयोगी मीरा बेन (मैडलिन स्लैड) ने भारत छोड़ी।
1954 – फनफानी ने इटली में सरकार का गठन किया।
1952 – मिस्र में ब्रिटेन विरोधी दंगे भड़के।
1951 – नीदरलैंड में झूठ पकड़ने वाली मशीन का पहली बार इस्तेमाल हुआ।
1945 – सोवियत संघ की सेना पोलैंड के शहर कराकोव में पहुंची तथा जर्मनी को वहां से पीछे हटने पर मजबूर किया।
1930 – रवीन्द्रनाथ टैगोर ने महात्मा गांधी के साबरमती आश्रम की यात्रा की।
1919 – 'बेंटले मोटर्स लिमिटेड' की स्थापना हुई।
1896 – 'एक्सरे मशीन' का पहला प्रदर्शन किया गया।
1866 – 'वेसले कॉलेज, मेलबर्न की स्थापना हुई।

योगवाही औषधियां, जो किसी जड़ी–बूटी के असर को कर दें दोगुना

नई दिल्ली, 17 जनवरी।

आयुर्वेद में योगवाही औषधियां वे जड़ी–बूटियां या पदार्थ होते हैं, जो किसी दूसरी दवा या औषधि की शक्ति और प्रभाव को बढ़ा देती हैं। ये खुद कम मात्रा में काम करती हैं, लेकिन मुख्य औषधि को शरीर के टिश्यू तक तेजी से पहुंचाकर उसका असर दोगुना कर देती हैं।

सबसे प्रसिद्ध योगवाही काली मिर्च है। यह दवाइयों का अवशोषण कई गुना बढ़ा देती है। इसके अलावा, पिप्पली फेफड़ों और पाचन से जुड़ी दवाओं का असर तेज करती है, अदरक पाचन और रक्त संचार सुधारकर औषधियों को शरीर में आसानी से पहुंचाती है। शहद त्वचा, गला, फेफड़े और हृदय की दवाओं को जल्दी असरदार बनाता है और रक्त में शीघ्र अवशोषित होता है। वहीं, घी मेधा, याददाश्त और तंत्रिका तंत्र से जुड़ी औषधियों को गहराई तक ले जाने का काम करता है।

त्रिकुट (काली मिर्च, पिप्पली, सोंठ) एक संयुक्त योगवाही फॉर्मूला है, जो पाचन अग्नि बढ़ाकर दवाओं को जल्दी रक्त में पहुंचाता है। इसके अलावा, लहसुन रक्त प्रवाह बढ़ाकर दवाओं को पूरे शरीर में फैलाता है, तिल का तेल बाहरी इस्तेमाल में दवा को मांसपेशियों और त्वचा में अवशोषित कराता है और यष्टिमधु कफजन्य औषधियों का असर बढ़ाता है। गाय के घी और शहद का मिश्रण भी कई औषधियों का शोषण तेज करता है और धीरे–धीरे शरीर की

धातुओं तक पहुंचाता है।

योगवाही औषधियां सबसे पहले अवशोषण बढ़ाती हैं। कई योगवाही आंतों की दीवार को थोड़ी देर खुला रखती हैं, जिससे दवा आसानी से अवशोषित हो जाती है। दूसरा, ये चयापचय धीमा करती हैं, जिससे दवा जल्दी टूटती नहीं और लंबे समय तक असर करती है। तीसरा, ये औषधि को लक्ष्य अंग तक पहुंचाती हैं। चौथा, ये पाचन अग्नि बढ़ाती हैं, जिससे औषधि बेहतर काम करती है और पांचवा, मधु और घी कोशिकीय अवशोषण को तेज करके दवा को कोशिकाओं तक आसानी से पहुंचाते हैं।

हालांकि, किसी भी आयुर्वेदिक जड़ी–बूटी का इस्तेमाल करने से पहले योग्य आयुर्वेदाचार्य से सलाह लेना जरूरी है, वरना फायदे की जगह नुकसान भी हो सकता है।

विंग्स इंडिया 2026: एशिया का सबसे बड़ा नागरिक उड्डयन कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन

नई दिल्ली, 17 जनवरी।

विंग्स इंडिया 2026 अब उड़ान भरने के लिए पूरी तरह तैयार है। यह एशिया का सबसे बड़ा नागरिक उड्डयन कार्यक्रम है, जो 28 से 31 जनवरी 2026 तक हैदराबाद के बेगमपेट हवाई अड्डे पर आयोजित किया जाएगा।

नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने शनिवार को जारी एक बयान में बताया कि विंग्स इंडिया 2026, एशिया का सबसे बड़ा नागरिक उड्डयन कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राममोहन नायडू करेंगे। इस बार विंग्स इंडिया 2026 की थीमः "भारतीय एविएशनः भविष्य का मार्ग प्रशस्त करना, डिज़ाइन से लेकर डिप्लॉयमेंट तक, मैन्युफैक्चरिंग से लेकर मेंटेनेंस तक, समावेशिता से लेकर इनोवेशन तक और सुरक्षा से लेकर सस्टेनेबिलिटी तक।" इस अवसर पर देश और विदेश के उच्च–स्तरीय गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रहेंगे।

वैश्विक विमानन के भविष्य को प्रदर्शित करने के लिए एशिया का सबसे बड़ा नागरिक उड्डयन कार्यक्रम एक भव्य समारोह के साथ किया जाएगा। यह 28 से 31 जनवरी, 2026 तक हैदराबाद के बेगमपेट एयरपोर्ट में होने वाली चार दिवसीय वैश्विक विमानन सभा की शुरुआत का प्रतीक होगा।

मंत्रालय के मुताबिक विंग्स इंडिया 2026 में शानदार स्टैटिक एयरक्राफ्ट डिस्प्ले, फ्लाइंग डिस्प्ले और एरोबेटिक

एयर शो होंगे, जिसमें कई तरह के एयरक्राफ्ट दिखाए जाएंगे। खास आकर्षणों में इंडियन एयर फ़ोर्स की सूर्य किरण एरोबेटिक टीम का हवाई प्रदर्शन शामिल है।

नागरिक उड्डयन कार्यक्रम विंग्स इंडिया 2026 में एक बड़ी अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी, स्टैटिक एयरक्राफ्ट डिस्प्ले, फ्लाइंग और एरोबेटिक शो, एक उच्चस्तरीय अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस, सीईओ राउंडटेबल, बी2बी और बी2जी मीटिंग, एक एविएशन जॉब फेयर, अवॉर्ड सेरेमनी और शानदार कल्चरल प्रोग्राम आयोजित होंगे। इसमें दुनियाभर से डेलीगेट्स और पार्टिसिपेंट्स के आने की उम्मीद है, जिससे यह इवेंट एक प्रमुख ग्लोबल एविएशन फोरम के तौर पर अपनी जगह और मज़बूत करेगा।

फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल के 57वें संस्करण में शामिल होंगे खेल मंत्री

हैदराबाद/नई दिल्ली, 17 जनवरी।

युवा कार्य एवं खेल मंत्रालय के तत्वावधान में फिट इंडिया मूवमेंट के तहत रविवार, 18 जनवरी को देशभर के कई शहरों में फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल के 57वें संस्करण का आयोजन किया जाएगा। यह पहल फिटनेस को जन आंदोलन के रूप में बढ़ावा देने और नागरिकों को सक्रिय एवं स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करने की भारत सरकार की प्रतिबद्धता को दोहराती है।

मंत्रालय के मुताबिक इस संस्करण में केंद्रीय युवा कार्य एवं खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया गुजरात के राजकोट के पास गोंडल में आयोजित साइक्लिंग कार्यक्रम में भाग लेंगे। उनकी सहभागिता सरकार द्वारा दैनिक जीवन में शारीरिक गतिविधि को शामिल करने और हर आयु वर्ग के लोगों को फिटनेस के प्रति जागरूक करने के प्रयासों को दर्शाती है।

57वें संस्करण का एक अन्य प्रमुख आकर्षण हैदराबाद में होने वाला आयोजन होगा, जिसे भारतीय खेल प्राधिकरण द्वारा तेलंगाना सरकार के सहयोग से प्रतिष्ठित गाचीबौली स्टेडियम में आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी. किशन रेड्डी कार्यक्रम में शामिल होकर इस राष्ट्रीय पहल को और गति प्रदान करेंगे।

हैदराबाद के आयोजन में विशिष्ट अतिथियों और प्रतिभागियों में शिवा सेना रेड्डी (अध्यक्ष, खेल प्राधिकरण तेलंगाना), पुलेला गोपीचंद (मुख्य राष्ट्रीय कोच एवं पूर्व ऑल इंग्लैंड चैंपियन), दीप्ति जीवनजी (अर्जुन पुरस्कार विजेता और पेरिस 2024 पैरालंपिक कांस्य पदक विजेता) सहित फिट इंडिया चैंपियंस, एंबेसडर्स और शीर्ष खिलाड़ी शामिल होंगे। इनकी मौजूदगी से खासकर युवाओं को फिटनेस और खेल को जीवनशैली का हिस्सा बनाने की प्रेरणा मिलने की उम्मीद है।

नई दिल्ली में भी 57वां संस्करण वसंत कुंज (डीएवी पब्लिक स्कूल, पॉकेट बी–1 के सामने) सुबह 7:30 बजे से आयोजित किया जाएगा। इसमें एशियन चैंपियनशिप और आईएसएसएफ जूनियर वर्ल्ड कप की स्वर्ण पदक विजेता भारतीय निशानेबाज रश्मिका सहगल और मुंबई सिटी एफसी के गोलकीपर विशाल जून जैसे खिलाड़ी भाग लेंगे।

हज यात्रा के लिए पंजीकरण की अंतिम तिथि बढ़ी

नई दिल्ली, 17 जनवरी।

हज यात्रा संबंधी प्रक्रिया पूरी करने की अंतिम तिथि बढ़ाकर 25 जनवरी कर दी गई है। अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय ने साफ किया है कि इसके बाद कोई अतिरिक्त समय नहीं दिया जाएगा।

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय ने हज यात्रियों से हज बुकिंग और अन्य कागजी प्रक्रिया 25 जनवरी 2026 तक पूरा कर लेने का अनुरोध किया है। हज यात्रियों को अपना वैध पासपोर्ट अपने चुने हुए एचजीओ (हज ग्रुप ऑर्गनाइजर) या संबंधित कार्यालय में जमा करने, नुसुक पोर्टल पर अपना पंजीकरण विवरण दर्ज करने को कहा गया है। मंत्रालय ने हज यात्रियों से कहा है कि बुकिंग करने से पहले यह जरूर जांच लें कि हज ग्रुप ऑर्गनाइजर सरकार द्वारा अधिकृत है या नहीं। उनका कोटा और रजिस्ट्रेशन स्टेटस चेक करना न भूलें।

सरकार ने स्पष्ट किया है कि 25 जनवरी के बाद अब तिथि आगे नहीं बढ़ाई जाएगी। इसलिए, अंतिम समय की भीड़ और तकनीकी दिक्कतों से बचने के लिए तीर्थयात्री जल्द से जल्द अपनी प्रक्रिया पूरी कर लें।

सरकार ने सट्टेबाजी–जुआ से जुड़े 242 अवैध वेबसाइट लिंक किए प्रतिबंधित

नई दिल्ली, 17 जनवरी।

केंद्र सरकार ने अवैध ऑनलाइन सट्टेबाजी और जुआ खेलने के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की। सरकार ने शुक्रवार को इससे संबंधित 242 गैर–कानूनी वेबसाइट लिंक को प्रतिबंधित कर दिया है।

आधिकारिक सूत्रों ने दी जानकारी में बताया कि सरकार ने सट्टेबाजी और जुआ खेलने से संबंधित 242 अवैध वेबसाइट के लिंक को ब्लॉक कर दिया है। केंद्र का ये आदेश पिछले साल अगस्त में पैसे के इस्तेमाल वाले गेमिंग ऐप पर लगाए गए सरकारी प्रतिबंध के बाद आया है।

जानकारी के मुताबिक ऑनलाइन गेमिंग अधिनियम पारित होने के बाद से अब तक 7,800 से अधिक अवैध सट्टेबाजी और जुआ से संबंधी वेबसाइट को बंद किया जा चुका है और प्रवर्तन कार्रवाइयों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।'' ये कार्रवाई उपयोगकर्ताओं, खासकर युवाओं की सुरक्षा और अवैध ऑनलाइन सट्टेबाजी एवं जुआ खेलने वाले मंचों से होने वाले वित्तीय और सामाजिक नुकसान को रोकने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को बताती है।

श्रीनगर का 'ट्यूलिप गार्डन' जहां देखने को मिलते हैं फूलों की 74 किस्में

नई दिल्ली/श्रीनगर, 17 जनवरी।

श्रीनगर का सिराज बाग, मशहूर डल झील के किनारे बना है। इस बाग में आपको ट्यूलिप की कलियां, अधखिले और पूरे खिले फूलों की 74 वैराइटी देखने को मिलती है।

इसे इंदिरा गांधी ट्यूलिप गार्डन भी कहा जाता है जोकि जबरवान पर्वत की तलहटी में है। पर्यटन विभाग हर साल ट्यूलिप फेस्टिवल का भी आयोजन करता है। इस गार्डन की अद्भुत खूबसूरती देखने का सबसे अच्छा समय मार्च महीने के अंत से लेकर 20–25 अप्रैल तक है। घाटी में ट्यूलिप खिलने का यही समय होता है।

वसंत महीने के बाद गार्डन बंद कर दिया जाता है और अगले सीजन की तैयारी शुरू हो जाती है। इस समय ट्यूलिप की खूबसूरती देखते ही बनती है। इतने सारे रंगों के ट्यूलिप फूलों के साथ बाग गुलजार नजर आता है।

इस गार्डन में ट्यूलिप फूलों की काफी सारी किस्में हैं, जिसमें मल्टी कलर ट्यूलिप से लेकर, डबल लेयर ट्यूलिप, तोते के आकार के ट्यूलिप शामिल हैं।

ये गार्डन फोटोग्राफी के लिए बहुत ही मशहूर है। जब यहां आएं तो अपने साथ कैमरा, ट्राईपॉड लाना ना भूलें। गार्डन में फोटोग्राफी करने की मनाही नहीं है।

जब आप इस गार्डन को अलग–अलग जगहों जैसे डल झील, चश्मे शाही से देखते हैं तो हर जगह से इसका व्यू कमाल का दिखता है।

इस ट्यूलिप फेस्टिवल में आपको कश्मीर का पारंपरिक नृत्य और संगीत का आनंद लेने का भी मौका मिलता है। ये फेस्टिवल 20 दिनों तक चलता है और बहार–ए–कश्मीर के अंतर्गत आता है।

इस फेस्टिवल के जरिए वादी में वसंत महीने का स्वागत किया जाता है। ये सैलानियों के आने का भी मौसम माना जाता है।

फेस्टिवल के दौरान टूरिस्ट्स के लिए हॉलैंड से लाखों ट्यूलिप मंगाए जाते हैं। इसका मकसद कश्मीर में बागवानी को बढ़ावा देना है।

ट्यूलिप गार्डन से सबसे नजदीकी श्रीनगर एयरपोर्ट है। एयरपोर्ट से ट्यूलिप गार्डन 19 किलोमीटर की दूरी पर है। दिल्ली से श्रीनगर के लिए सीधी ट्रेन भी है। वैसे यहां आसानी और जल्दी पहुंचने का जरिया फ्लाइट ही है।

आपको ट्यूलिप गार्डन में एंट्री के लिए टिकट लेनी होती है, जिसकी कीमत 75 रुपए है। बच्चों के लिए टिकट की कीमत कम रखी गई है।

अगर आप ट्यूलिप गार्डन की एक शांत सैर करना चाहते हैं तो वीकडेज पर आने का प्लान करें।

चूंकि ये एशिया का सबसे बड़ा ट्यूलिप गार्डन है तो यहां भीड़ काफी होती है, इसलिए अपने टिकट और रुकने का इंतजाम एंडवांस में करा लें।

यहां गार्डन में ट्यूलिप के फूलों और पौधों को छूना या उन्हें तोड़ना मना है। ये सिर्फ देखने के लिए हैं।

इस समय भी श्रीनगर की फिजा में हल्की ठंडक रहती है तो अपने साथ कुछ गर्म कपड़े जरूर रखें।

प्रधानमंत्री विश्वकर्मा हाट 2026 का आयोजन 18 से 31 जनवरी तक दिल्ली हाट में किया जाएगा

नई दिल्ली, 17 जनवरी।

भारत सरकार का सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (एमएसएमई) पीएम विश्वकर्मा योजना के अंतर्गत कारीगरों और शिल्पकारों को समर्पित एक प्रदर्शनी, पीएम विश्वकर्मा हाट 2026 का आयोजन कर रहा है। यह प्रदर्शनी 18 से 31 जनवरी 2026 तक दिल्ली हाट, आईएनए, नई दिल्ली में होगी और सुबह 10:30 बजे से रात 10:00 बजे तक जनता के लिए खुला रहेगी। केंद्रीय एमएसएमई मंत्री श्री जीतन राम मांझी एमएसएमई राज्य मंत्री सुश्री शोभा करंदलाजे की उपस्थिति में इस प्रदर्शनी का उद्घाटन करेंगे।

पीएम विश्वकर्मा हाट 2026 का उद्देश्य भारत की समृद्ध पारंपरिक शिल्पकला विरासत का उत्सव मनाना और उसे प्रदर्शित करना है, साथ ही कारीगरों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खरीदारों, हितधारकों और आम जनता के सामने अपने हस्तनिर्मित उत्पादों को प्रदर्शित करने और उनका विपणन करने के लिए एक प्रमुख मंच प्रदान करना है।

इस प्रदर्शनी में देश भर के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 117 से अधिक कारीगर भाग लेंगे। इस प्रकार यह विविध पारंपरिक कौशल और शिल्पकला का अखिल भारतीय प्रतिनिधित्व करेगा। इस हाट का उद्देश्य प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना के लाभार्थियों के लिए बाजार तक पहुंच बढ़ाना, लोगों तक अधिक से अधिक पहुंचना और स्थायी आजीविका के अवसर सृजित करना है। प्रधानमंत्री विश्वकर्मा हाट 2026 में विदेशी दूतावासों के प्रतिनिधियों को भी आमंत्रित किया गया है।

यह प्रदर्शनी पारंपरिक शिल्पकलाओं की एक विस्तृत श्रृंखला, शिल्पकला के प्रत्यक्ष प्रदर्शन और सांस्कृतिक अनुभवों को प्रदर्शित करेगी जो "विश्वकर्मा का अभियान, विकसित भारत का निर्माण" की भावना को दर्शाएगी। पीएम विश्वकर्मा हाट 2026, कारीगरों को सशक्त बनाने, पारंपरिक कौशल को संरक्षित करने और लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई) तंत्र को मजबूत करने के प्रति भारत सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

हम सब मिलकर 2047 तक भारत को बनाएंगे विकसित और आत्मनिर्भर–केन्द्रीय मंत्री

भोपाल, 17 जनवरी।

केंद्रीय सड़क, परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी ने कहा कि विकसित और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण हमारे लिए सिर्फ स्वप्न नहीं, एक संकल्प है और इस संकल्प को पूरा करने के लिए पूरा देश एकजुट और एकमत होकर काम कर रहा है। हम सब मिलकर 2047 तक भारत को विकसित और आत्मनिर्भर बनाएंगे। देश के समग्र विकास के इस महायज्ञ में सबसे बड़ी आहुति मध्य प्रदेश की ही होगी।

केन्द्रीय सड़क मंत्री श्री गडकरी शनिवार को मध्य प्रदेश के विदिशा में आयोजित विभिन्न सड़क परियोजनाओं के लोकार्पण एवं भूमिपूजन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सही नेतृत्व और समर्पित सरकार से कदमताल कर हम मध्य प्रदेश को एक प्रगतिशील, समृद्ध और सम्पन्न राज्य बनाएंगे।

कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री गडकरी, मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव तथा केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मध्य प्रदेश के विकास को और गति देने के लिए विदिशा में 4400 हजार करोड़ रुपये की लागत से 8 सड़क परियोजनाओं का लोकार्पण एवं भूमि–पूजन किया।

श्री गडकरी ने कहा कि हम मध्य प्रदेश के विकास को शक्ति देने के लिए पूरी ताकत से अपना सहयोग देंगे। उन्होंने इस मौके पर मध्य प्रदेश के विकास से जुड़ी विभिन्न सड़क परियोजनाओं पर सहमति व्यक्त कर करीब एक लाख करोड़ रुपये की नई परियोजनाओं को मंजूरी दी।

क्या होता है ई–आधार? कैसे और कहां कर सकते हैं इसे डाउनलोड

नई दिल्ली, 17 जनवरी।

आज हर जगह आधार कार्ड की जरूरत हो ही जाती है। फिर चाहे कोई सरकारी काम हो या बैंक में खाता खुलाना हो। लेकिन ये जरूरी नहीं है कि हमारे पास फिजिकल आधार कार्ड मौजूद हो। ऐसे में ई–आधार आपके काम आ सकता है। अब मसला ये है कि इसके लिए कैसे और कहां अप्लाई किया जाए। आइए आपकी ये समस्या आज दूर कर देते हैं। लेकिन उससे पहले जानते हैं कि ई–आधार क्या होता है?

ई–आधार एक तरह से फिजिकल आधार कार्ड की डिजिटल फॉर्म है। अब आपको आधार कार्ड का इस्तेमाल करने के लिए इसे हर वक्त जेब पर लेकर घूमने की जरूरत नहीं है। ये आप पीडीएफ फॉर्म में डाउनलोड कर सकते हैं। इसे भी आधार नियंत्रित करने वाली संस्था UIDAI जारी करती है।

ई–आधार पर नाम, पता और अन्य डिटेल्स और फत कोड दिया जाता है। आइए अब जानते हैं कि आप इसे कैसे और कहां से डाउनलोड कर सकते हैं।

अगर आप ई–आधार डाउनलोड करना चाहते हैं तो नीचे दिए स्टेप्स को फॉलो करना होगा।

स्टेप 1– सबसे पहले आपको UIDAI की ऑफिशियल वेबसाइट पर जाना होगा।

स्टेप 2– यहां आपको डाउनलोड आधार का ऑप्शन मिलेगा।

स्टेप 3– अब इसे डाउनलोड करने के लिए आपको आधार नंबर, एनरोलमेंट आईडी या वर्चुअल आईडी (VID) में से कोई एक दर्ज करना होगा।

स्टेप 4– फिर आपको कैप्चा कोड दर्ज करना होगा।

स्टेप 5– इसके बाद सैंड ओटीपी वाले ऑप्शन पर क्लिक करें।

स्टेप 6– ये ओटीपी आपको आधार से लिंक मोबाइल पर मिलेगा। इसे वेबसाइट पर दर्ज कर दें।

स्टेप 7– इसके बाद आपका ई–आधार डाउनलोड हो जाएगा। ये आप मोबाइल पर फाइल ऑप्शन पर देख सकते हैं।

गोभी ही नहीं इन चीजों में भी पाया जाता है कीड़ा, एम्स की न्यूरोलॉजिस्ट ने लोगों को किया अलर्ट

नई दिल्ली, 17 जनवरी।

बहुत से लोग ऐसा मानते हैं कि पत्तागोभी खाने से कीड़े दिमाग में चले जाते हैं, जिससे इंसान पागल हो सकता है, दिमागी दौरा पड़ सकता है या मौत तक हो सकती है। ऐसे में लोगों के मन में सवाल उठता है कि क्या यह बात सच है? डॉक्टर ने बताया कि पत्तागोभी खेत में उगते समय मिट्टी और नमी के कारण आसानी से कीड़ों का घर बन जाती है। इसकी पत्तियां परतदार होती हैं, जिनके अंदर छोटे कीड़े और उनके अंडे छिपे रह सकते हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि पत्तागोभी खाने से सीधे दिमाग में कीड़े रेंगने लगते हैं।

एम्स की न्यूरोलॉजिस्ट डॉक्टर प्रियंका शेहरावत ने बताया, दिमाग का कीड़ा जिसे मेडिकल भाषा में न्यूरोसिस्टीसरकोसिस कहते हैं। इसमें न्यूरो मतलब दिमाग, सिस्टी मतलब सिस्ट और सरकोसिस उस वॉर्म यानि कीड़े के लिए इस्तेमाल किया जाता है, जिसका नाम है टीनिया सोलियम। डॉक्टर ने बताया कि ऐसा नहीं है कि ये कीड़ा दिमाग में रेंगता और चलता फिरता रहता है। इस कीड़े के अंडे मिट्टी में पाए जाते हैं, गंदी सब्जियों में होते हैं और अधपके मांस और पोर्क में पाए जा सकते हैं। अगर आप इन्हें खाते हैं तो स्टमक एसिड इस कीड़े के अंडे को डिजॉल्व नहीं कर पाते हैं। जिसकी वजह से ये अंडे खून से होते हुए शरीर के अलग–अलग हिस्सों में पहुंच सकते हैं। ज्यादातर ये दिमाग, आंख, लिवर, फेफड़ों और मांसपेशियां में जाकर जमा हो जाते हैं। जब ये अंडे दिमाग में पहुंचते हैं तो दिमाग उसके खिलाफ रिएक्ट करता है। इससे दिमाग में सूजन आ जाती है।

दिमाग में सूजन आने की वजह से मरीज को सिर दर्द

होना और दौरे आने शुरू हो जाते हैं। उल्टी की समस्या होती है और चक्कर आने लगते हैं। न्यूरोसिस्टीसरकोसिस देश में बच्चों में दौरे आने का सबसे बड़ा कारण है। ये दौरे किसी भी उम्र के लोगों को आ सकते हैं। इलाज की बात करें तो 98 प्रतिशत मरीज दवाओं से ठीक हो जाते हैं, जबकि सिर्फ 2 प्रतिशत मामलों में सर्जरी की जरूरत पड़ती है।

दिमाग के कीड़े से कैसे बचें

कच्चा या अधपका मांस और पोर्क खाने से आपको पूरी तरह से बचना चाहिए।

सब्जियों को अच्छी तरह से पानी से धो लें चलते हुए पानी में सब्जियों को वॉश करें।

अब सब्जियों को पूरी तरह से सूखने दें क्योंकि गीली सब्जियों में भी कीड़ा पनपने लगता है।

सब्जियों को मीडियम लेम पर लंबे समय तक पकाने से ये अंडे जीवित नहीं रहते हैं।

इसलिए कच्ची सब्जी, सलाद और गंदी चीजों का सेवन भूलकर भी नहीं करना चाहिए।